देश के 30 साहित्यकार राजधानी में जुटे, आदिवासी कहानी-कविताओं का पाठ

छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी का आयोजन

नवभारत ब्यूरो । रायपुर।

आदिवासी साहित्य आदिवासी आंदोलन की परंपरा और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में आदिवासियों की भागीदारी से जुड़ी कहानियों को सामने लाता है और बताता है कि किस प्रकार आदिवासी आंदोलन साम्राज्यवाद के साथ सामंतवाद से भी लड़ने के कारण ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। आदिवासी साहित्य उनकी सांस्कृतिक विरासत को संचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाता है।

यह बातें बी. रघु ने रविवार को राजधानी के सिविल लाइन स्थित नवीन विश्रामगृह के कन्वेंशन हॉल में दो दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन में कही। यह आयोजन साहित्य अकादमी नई दिल्ली, छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी और छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद के संयुक्त तत्वाधान में हुआ। सम्मिलन के दूसरे दिन की शुरुआत विरासत की रक्षा के लिए आदिवासी साहित्य का वैभव विषय पर केंद्रित रहा, जिस पर एम. मणि मैतेई की अध्यक्षता में जितेंद्र बसावा, बी. रघु और पी. शिवरामकृष्ण ने अपने विचार रखे।

दूसरे सत्र में कहानियों का पाठ सत्र माणिकलाल विश्वकर्मा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसमें डॉ. गीता बंजारा आदिवासी कोली में, बी.आर. साहू छत्तीसगढ़ी, विक्रम सोनी हल्बी तथा स्वाति आनंद पारधी कहानी-पाठ किया। बहुभाषीय काव्य-पाठ विषय पर आधारित षष्ठ एवं अंतिम सत्र डॉ. जयप्रकाश मानस की अध्यक्षता में हुआ। इसमें धनिराम कडामिया ने बैगानी भाषा, शकुंतला तरार ने छत्तीसगढ़ी, नीतू कुसुम बिलुंग ने खड़िया, प्रिस्का कुजूर ने कुरुख तथा डॉ. महेश्वरी बी. गावित ने वारली भाषा में अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन जय सिंह ने किया।